# 31

# ठञधिकारादि प्रकरण

समग्र तद्धितप्रकरण को लेकर ये चार पाठ कल्पित किए गए है। अभी उनमें से अन्तिम पाठ यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। इस चतुर्थ पाठ में ठञधिकार प्रकरण से स्वार्थिक प्रकरण तक आलोचना की जा रही है। इस तुर्ये पाठे ये तावत् अस्मद्व्यवहृताः शब्दा वर्तन्ते ते एव मुख्यतया आलोच्यन्ते यथा संस्कृतभाषया अस्माकं लोकव्यवहारः सुष्ठु स्यात्। तत्र तत्र प्रसिद्धानि तद्धितान्त रूपाणि प्रदर्शितानि सन्ति। यथा – च्विप्रत्ययान्तरूपं, तयप्प्रत्ययान्तरूपं, वतुप्-प्रत्ययान्तरूपं, तरप्प्रत्ययान्तरूपं, तमप्-प्रत्ययान्तरूपमित्येवं विविधानि रूपाणि। एवञ्च अणञौ, त्वतलौ, इमनिच्, ष्यञ्, वतुप्, तयप्, तमप्, तरप्, च्वि इत्यादयः प्रत्यया मुख्यतया अत्र आलोच्यन्ते। अग्रे एतेषां स्पष्टम् आलोचनं भविष्यति। तद्धितप्रत्ययः प्रातिपदिकात् भवति इति भवन्तः पूर्वं ज्ञातवन्तः। किन्तु कदाचित् तिङन्तादपि भवति यथा पचतितमाम्। तद्धितप्रत्ययविधायकसूत्रेषु प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथमाद्वा इत्येते अधिक्रियन्ते इति स्मर्तव्यम्।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- सरलता से ठञादि प्रत्ययों के प्रयोग का ज्ञान जान पाने में;
- ठञधिकार प्रकरण आदि के सूत्रों के अर्थ का ज्ञान जान पाने में;
- लौकिक और अलौकिक विग्रहों का परिचय जान पाने में;
- ठञधिकार प्रकरण आदि के सूत्रों और उदाहरणों को जान पाने में;
- तद्धित प्रत्यय के प्रयोग विषय में सहज रूप से जान पाने में;
- सर्वोपरि तद्धितान्त पद का प्रयोग कहाँ और कैसे करना चाहिए यह जान पाने में।

टिप्पणियाँ



## 31.1 तस्येश्वरः॥ ( ५.१.४२ )

**सूत्रार्थः** – सर्वभूमि और पृथिवी शब्दों से अण् और अञ् होते हैं।

**सूत्रव्याख्या** – इस विधिसूत्र में दो पद है। तस्य (५/२), ईश्वरः (१/१) यह सूत्रगत पदच्छेद है। सूत्र में तस्य यह षष्ठ्यन्तानुकरण लुप्तपञ्चमीकम है। सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणञौ यह सूत्र अनुवर्तित होता है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथम द्वितीय ये अधिकार करते हैं। सर्वा भूमिः सर्वभूमिः, कर्मधारय होने पर पूर्वपद का पुंवद्भाव, सर्वभूमिश्च पृथिवी च सर्वभूमिपृथिव्यौ, ताभ्यां सर्वभूमिपृथिवीभ्याम्, इतरेतरयोगद्वन्द्वः। यथासंख्यमनुदेशः समानाम् यह परिभाषा प्रवर्तित होती है। इस प्रकार तस्य= षष्ठ्यन्त सर्वभूमि और पृथिवी प्रातिपदिकों से ईश्वर अर्थ में (स्वामी अर्थ में) यथासंख्य तद्धितसंज्ञक अण् और अञ् प्रत्यय पर में होते हैं,यह सूत्रार्थ सिद्ध होता है। इस प्रकार सर्वभूमि शब्द से अण्, और पृथिवी शब्द से अञ् होता है यह जानना चाहिए।अण् का णकार और अञ् का ञकार इत् होता है। इस कारण दोनों स्थान पर अकार ही शेष रहता है। किन्तु दोनों का स्वर में भेद है। यथा णित् का फल अन्त उदात्त स्वर का विधान है। ञित् का फल तो उदात्तादि स्वर का विधान है।

**उदाहरण** – सार्वभौमः। सर्वभूमेः ईश्वरः यह लौकिक विग्रह होने पर सर्वभूमि ङस् इस षष्ठ्यन्त प्रातिपदिक से तस्येश्वर इस के योग से अण् प्रत्यय होने पर, तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा होने, सुपो धातुप्रातिपदिकयोः इसके योग से सुब्लुक होने, तद्धितेष्वचामादेः इस सूत्र से आदिवृद्धि की प्राप्ति होने पर, अनुशतिकादि में सर्वभूमि शब्द का पाठ होने से उस वृद्धि को बांधकर अनुशतिकादीनाञ्च इस सूत्र से उभयपद में वृद्धि होने पर सार्वभौम अ इस स्थिति में यचि भम् इस सूत्र से मकारोत्तरवर्ती अकार की भसंज्ञा होने पर यस्येति च इस सूत्र से उस अकार का लोप होने पर सार्वभौम् अ इस स्थिति में एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक होने के कारण स्वादिकार्य होने परसार्वभौमः यह रूप सिद्ध होता है।

इस प्रकार ही पृथिव्याः ईश्वरः इस अर्थ में प्रकृत सूत्र से अञ् प्रत्यय होने पर तद्धितेष्वचामादेः इस सूत्र से आदिवृद्धि और स्वादिकार्य करने पर पार्थिवः यह रूप सिद्ध होता है।

किन्तु तत्र विदित इति च इसके योग से तत्र विदित इस अर्थ में सर्वभूमि और पृथिवी शब्दों से अण् और अञ् होते हैं यह कहा गया है तेन सर्वभूमौ विदित इस अर्थ में उस सूत्र से अण् होने पर सार्वभौमः यह रूप सिद्ध होता है। पृथिव्यां विदित इत्यर्थे अञि पार्थिवः इति रूपं यह सिद्ध होता है।

## 31.2 तस्य भावस्त्वतलौ॥ ( ४.१.११९ )

**सूत्रार्थः** – षष्ठ्यन्त समर्थ प्रातिपदिक से भावार्थ में त्व और तल् तद्धित संज्ञक प्रत्यय परे में हो।

**सूत्रव्याख्या** – इस विधिसूत्र में तीन पद है। इस सूत्र में तस्य (५/१), भावः (१/१), त्वतलौ (१/२) यह सूत्रगत पदच्छेद है। सूत्र में तस्य यह षष्ठ्यन्तानुकरण लुप्तपञ्चमी है। त्वश्च तल्

च तयोरितरेतरयोगद्वन्द्वस्त्वतलौ। भावः प्रथमा एकवचनान्त है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथमाद्वा ये अधिकार करते हैं। प्रकृतिजन्य बोध होने पर प्रकारः भाव यह कहा जाता है। अर्थात् प्रकृति में विशेषण रूप से भासित होता है,वह ही भाव शब्द से नहीं कहा जाता है। जैसे गोरूप प्रकृति में गोत्वरूप विशेषण भासित होता है, वह ही भाव कहा जाता है। इस प्रकार सामान्य रूप से हम कह सकते हैं कि जो किसी भी शब्द का प्रवृत्ति निमित्त ही भाव कहलाता है। यथा घट में घटत्व, पुस्तक में पुस्तकत्व। भाव विषय में अधिक ज्ञात करने के लिए लघुसिद्धान्तकौमुदी में इस सूत्र को देखो।

**उदाहरणम्** – गोर्भावः यह लौकिक विग्रह करने पर गो ङस् इस षष्ठ्यन्त प्रातिपदिक से तस्य भावस्त्वतलौ इस शास्त्र से त्वप्रत्यय होने पर प्रातिपदिक संज्ञा, सुब्लुक होने पर गोत्व इस स्थिति में सुविभक्तौ त्वान्तं नपुंसकम् इस योग से त्वप्रत्ययान्त का नपुंसकत्व है, इस कारण से सु को अम् आदेश, पूर्वरूपैकादेश होने पर गोत्वम् यह रूप सिद्ध होता है। किन्तु जब तल् प्रत्यय का विधान होता है, तब तो लकार के इत्संज्ञक होने से तलन्तं स्त्रियाम् इस के योग से तलन्त का स्त्रीलिङ्गकत्व होने से अजाद्यतष्टाप् इस सूत्र से टाप् प्रत्यय, अनुबन्धलोप, अकः सवर्णे दीर्घः इस से सवर्ण दीर्घ होने पर और सु का हल्ङ्यादिलोप होने पर गोता यह रमा के समान रूप सिद्ध होता है। इस प्रकार गोता यह रूप सिद्ध होता है। इस तरह गोत्वं गोता ये दो रूप होते हैं।

## 31.3 पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा॥ (५.१.१२२)

**सूत्रार्थ** – पृथ्वादिगण में पठित षष्ठ्यन्त समर्थ प्रातिपदिक से भाव अर्थ में तद्धितसंज्ञक इमनिच् प्रत्यय पर में विकल्प से होता है।

**सूत्रव्याख्या** – इस विधि सूत्र में तीन पद हैं। पृथ्वादिभ्यः (५/३), इमनिच् (१/१) वा (अव्ययम्) ये सूत्रगत पदों का विच्छेद है। पृथुः आदिर्येषां ते पृथ्वादयः तेभ्यः पृथ्वादिभ्यः यह तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि समास है। पृथ्वादि एक गण है। और वह गणपाठ में स्थित है। तस्य भावस्त्वतलौ यहाँ से तस्य, भावः इन दोनों की अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथमाद्वा ये अधिकार करते हैं। इस प्रकार तस्य=षष्ठ्यन्त पृथ्वादि प्रातिपदिक से भाव अर्थ में तद्धितसंज्ञक इमनिच् प्रत्यय विकल्प से होता है यह सूत्रार्थ है। सूत्र में वा का कथन अणादि के समावेश के लिए है। इमनिच् का द्वितीय इकार और चकार इत्संज्ञक हैं। अतः इमन् मात्र ही शेष रहता है। चकार अनुबन्ध स्वर के लिए हैं। इमनिच् प्रत्ययान्त शब्द संस्कृत में पुंलिङ्ग होता है।

**उदाहरण** – पृथोर्भावः यह लौकिक विग्रह होने पर, पृथु ङस् इस षष्ठ्यन्त प्रातिपदिक से पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा इस सूत्र से विकल्प से इमनिच् प्रत्यय, अनुबन्धलोप, प्रातिपदिक संज्ञा, सुब्लुक होने पर पृथु इमन् इस स्थिति में र ऋतो हलादेर्लघोः इस सूत्र से ऋकार के स्थान पर र आदेश होने पर प् र इमन् इस स्थिति में टेः इस सूत्र से टिसंज्ञक के उकार का लोप होने पर, प्रथ् इमन् इ होने पर, सुप्रत्यय, उपधादीर्घ, हल्ङ्यादिलोप और नकार का लोप होने पर प्रथिमा यह रूप सिद्ध होता है। और राजन् शब्द के समान रूप होते हैं – प्रथिमानौ प्रथिमानः। किन्तु जब इमनिच् नहीं होता

टिप्पणियाँ



है, तब इगन्ताच्च लघुपूर्वात् इस सूत्र से अण् प्रत्यय होने पर पृथु अ इस स्थिति में ओर्गुणः इससे गुण ओकार होने पर उस स्थान में अवादेश होने और स्वादिकार्य होने पर पार्थवम् यह रूप सिद्ध होता है। किन्तु आ च त्वात् यहाँ से त्व और तल् अधिकृत होने से वे दोनों भी होते हैं,उससे पृथुत्वम्, पृथुता यह दो रूप होते हैं। इस प्रकार प्रथिमा, पार्थवं, पृथुता, पृथुत्वम् ये चार रूप सिद्ध होते हैं।

## 31.4 गुणवचनब्राह्मणणादिभ्यः कर्मणि च॥ (५.१.१२४)

**सूत्रार्थ**- षष्ठ्यन्त समर्थ गुणवाचक प्रातिपदिक से और ब्राह्मणादि गण में पठित षष्ठ्यन्त समर्थ प्रातिपदिक से भावार्थ और कर्मार्थ में तद्धित संज्ञक ष्यञ् प्रत्यय पर में होता है।

**सूत्रव्याख्या** - इस विधिसूत्र में तीन पद हैं। गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः (५/३), कर्मणि (७/१) च यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। गुणं प्रोक्तवन्तः इति गुणवचनाः। ब्राह्मणः आदिर्येषां ते ब्राह्मणादयः इस प्रकार तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहिसमास है। गुणवचनाश्च ब्राह्मणादयश्च तेषामितरेतरयोगद्वन्द्वो गुणवचनब्राह्मणादयः तेभ्यः गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः। तस्य भावस्त्वतलौ यहाँ से तस्य, भावः इत्न दोनों पदों की, किञ्च वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ् यहाँ से ष्यञ् इस पद की अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथमाद्वा ये सूत्र अधिकार करते हैं। इस प्रकार तस्य= षष्ठ्यन्त गुणवचन ब्राह्मणादि प्रातिपदिकों से कर्म और भाव में तद्धितसंज्ञक ष्यञ् प्रत्यय पर होता है यह सूत्रार्थ सिद्ध होता है। ष्यञ् के षकार की षः प्रत्ययस्य इस सूत्र से इत्संज्ञा होती है,यह ध्यान रखना चाहिए चकारा से भाव में भी ष्यञ् होता है, यह चकारपद का प्रयोजन है। ब्राह्मणादिगण आकृतिगण है। कर्मपद से कार्य की क्रिया का बोध होता है। गुणवचन शब्द वह ही होता है, जो आदि में गुणार्थ में प्रवृत्त होता है। तत्पश्चात् गुण और गुणी के अभेद उपचार से मतुप् का लोप होता है अथवा तद्गुणयुक्तद्रव्य का वाचक होता है। पूर्व सूत्रों से भावार्थ में ही प्रत्यय का विधान किया गया है। यहाँ तो कर्मार्थ में भी प्रत्यय विधान के लिए यह सूत्र शुरू किया गया है।

**उदाहरण**- जडस्य भावः कर्म वा यह लौकिक विग्रह होने पर जड़ ङस् इस षष्ठ्यन्त गुणवचन प्रातिपदिक से गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च इस सूत्र से ष्यञ् प्रत्यय होने पर, अनुबन्धलोप, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक, आदिवृद्धि, भसंज्ञक अकार का लोप, स्वादिकार्य होने पर जाड्यम् यह रूप सिद्ध होता है। तत्पश्चात् त्व और तल् प्रत्यय करने पर जडत्वम्, जडता ये रूप बनते हैं। किन्तु केवल भावार्थ में दृढादि हने से इमनिच् होने पर जडिमा यह रूप सिद्ध होता है।

इस प्रकार ब्राह्मणस्य भावः कर्म वा (अर्थ में ) ब्राह्मण्यम्, ब्राह्मणत्वम्, ब्राह्मणता और चोरस्य भावः कर्म वा (अर्थ में) चौर्यम्, चौर्यत्वम्, चौर्यता इत्यादि रूप सिद्ध होते हैं।

## 31.5 तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ॥ (५.२.२६)

**सूत्रार्थ** - तृतीयान्त समर्थ प्रातिपदिक से वित्त अर्थ में चुञ्चुप्-चणपौ प्रत्यय पर होते हैं।

**सूत्रव्याख्या** - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। तेन, वित्तः, चुञ्चुप्चणपौ यह सूत्रगत पदच्छेद है। चुञ्चुप् च चणप् च तयोरितरेतरयोगद्वन्द्वः चुञ्चुप्चणपौ इति प्रथमा द्विवचनान्त है। तेन

यह तृतीया एकवचनान्त है। वित्तः यह सप्तमी अर्थ में प्रथमान्त है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथमाद्वा ये सूत्र अधिकार करते हैं। उन दोनों चुञ्चुप् और चणपो प्रत्ययों के आदि चकार का चुटू इस सूत्र से इत्संज्ञा प्राप्ति इति पृच्छायामुच्यते भाष्यकार यहाँ य्चुञ्चुप्-य्चणपौ यह यकार प्रश्लेष पाठ पढते हैं। अतः आद्य चकार का अभाव होने से दोष नहीं हैं। चुञ्चुप् और चणप् इन दोनों स्थानों पर पकार की इत्संज्ञा होती है। इस प्रकार तृतीयान्त समर्थ प्रातिपदिक से प्रतीत, ज्ञात, प्रसिद्ध अर्थों में चुञ्चुप् और चणप् प्रत्यय पर होते हैं यह सूत्रार्थ है।

**उदाहरणम्** - विद्याचुञ्चुः, विद्याचणः। विद्यया वित्तो इति लौकिक विग्रह होने पर विद्या टा इस अलौकिक विग्रह में प्रकृत सूत्र से चुञ्चुप्प्रत्यय, अनुबन्धलोप, प्रातिपदिकादि कार्य होने पर विद्याचुञ्चुः यह रूप सिद्ध होता है। चणप्प्रत्यय पक्ष में तु विद्याचणः यह रूप सिद्ध होता है।

## 31.6 किमिदम्भ्यां वो घः॥ (४.२.४०)

**सूत्रार्थ** - परिमाण अर्थ वर्तमान समर्थ किम्-इदम्भ्या पर्ररतिपदिकाभ्यां प्रथमान्त तदस्य परिमाणमस्तीत्यर्थे वतुप्-प्रत्ययो भवति वतुपः वकारस्य स्थाने च घकारादेशो भवति।

**सूत्रव्याख्या** - इस विधि सूत्र में तीन पद हैं। किमिदम्भ्याम् (५/२), वः (६/१), घः (१/१) यह सूत्रगत पदच्छेद है। किम् च इदं च उनका इतरेतरयोगद्वन्द्व होने पर किमिदमौ ताभ्याम् किमिदम्भ्याम्। यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप् यहाँ से परिमाणे और वतुप् इन दोनों की, तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतच् यहाँ से तदस्य इसकी अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथमाद्वा ये अधिकार करते हैं। और उक्तार्थ सिद्ध होता है।

**उदाहरण** - किं परिमाणमस्य इति लौकिक विग्रह होने पर किम् सु अलौकिक विग्रह होने पर किमिदम्भ्यां वो घः इस सूत्र से वतुप्-प्रत्यय होने पर वकार का स्थान पर घ्-आदेश होने पर, प्रातिपदिक संज्ञा, सुब्लुक होने पर किम् घ् अत् इस स्थिति में घ् इसके स्थान पर आयनेयादि सूत्र से इयादेश होने पर किम् इयत् इस स्थिति में इदंकिमोरीश्की इस सूत्र से किम् इसके स्थान पर कि - यह आदेश होता है। उससे कि इयत् इस स्थिति में सु विभक्ति उपधादीर्घ, नुमागम, हलङ्यादिलोप, संयोगान्तलोप होने पर कियान् यह रूप सिद्ध होता है।

### पाठगत प्रश्न 31.1

1. सर्वभूमेः निमित्तमित्यर्थे निष्पन्नस्य सार्वभौमः इति पदे कः प्रत्ययोऽस्ति।
2. कियान् यहाँ कौन सा प्रत्यय है?
3. गोर्भावः इस अर्थ में कितने रूप होते है और वे कौन से है?
4. विद्याचुञ्चुः यहाँ कौन सा प्रत्यय है?

टिप्पणियाँ



5. विद्याचण: यहाँ चणप्रत्यय विधायक सूत्र कौन सा है?

6. जाड्यम् यहाँ कौन सा प्रत्यय है?

7. गुणवचनब्राह्मणादिभ्य: कर्मणि च इस सूत्र से क्या विधान किया जाता है?

8. पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा इस सूत्र से कौन सा प्रत्यय होता है?

9. पृथोर्भाव: यह विग्रह होने पर कौन सा पद होता है?

10. तलन्त का स्त्रीलिङ्गक किस सूत्र से होता है?

## 31.7 किमोऽत्॥ (५.३.१२)

**सूत्रार्थ** – सप्तम्यन्त किम्शब्द से विकल्प से अत् प्रत्यय होता है, पक्ष में त्रल् भी होता है।

**सूत्रव्याख्या** – यह विधिसूत्र है। किम: पञ्चमी एकवचनान्त है, अत् यह प्रथमा एकवचनान्त है। सप्तम्यास्त्रल् यहाँ से सप्तम्या: इसकी अनुवृत्ति होती है। और उस प्रातिपदिक इत्यस्य विशेषणमस्ति। अत: तदन्त विधि में सप्तम्यन्त यह अर्थ प्राप्त होता है। प्रत्यय:, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात, तद्धिता: ये अधिकार करते हैं। तथा च सप्तम्यन्त किम्-प्रातिपदिक से स्वार्थ में तद्धितसंज्ञक: अत्प्रत्यय विकल्प से होता है यह सूत्रार्थ सम्पादित होता है।। वा ह छन्दसि यहाँ से वा पद का अनुकर्षण होता है। अत: तकार इत् होता है। इस कारण अ यह ही शेष रहता है। तित्स्वरितम् इस सूत्र से स्वरित स्वर अर्थ के लिए तकारानुबन्ध किया गया है,यह जानने योग्य है।

**उदाहरण** – क्व, कुत्र। कस्मिन् यह लौकिक विग्रह करने पर किम् ङि इस सप्तम्यन्त प्रातिपदिक से सप्तम्यास्त्रल् इस के योग से त्रल् प्राप्त होने पर उसको बांधकर किमोऽत् इस शास्त्र से अत्प्रत्यय होने पर, अनुबन्धलोप, किम् अ इस स्थिति में क्वाति इस के योग से किम् शब्द के स्थान पर क्व यह आदेश होने पर क्व अ इस स्थिति में भसंज्ञक अकार का लोप होने पर क्व् अ इस स्थिति में सुप्रत्यय और अव्यय होने से विभक्ति का लोप होने पर क्व यह रूप सिद्ध होता है।

## 31.8 यत्तदेतेभ्य: परिमाणे वतुप्॥ (५.२.३९)

**सूत्रार्थ** – तत्परिमाणमस्य इस अर्थ में परिमाण में वर्तमान प्रथमान्त यत्, तत् और एतद् से तद्धितसंज्ञक वतुप् प्रत्यय: हो।

**सूत्र व्याख्या** – इस विधिसूत्र में तीन पद हैं। यत्तदेतेभ्य: (५/३), परिमाणे (७/१), वतुप् (१/१) यह सूत्रगत पदच्छेद है। यत् च तत् च एतत् च इति इनका इतरेतरयोगद्वन्द्व होने पर यत्तदेतद:, तेभ्य: यत्तदेतेभ्य:। तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतच् (५.२.३६) यहाँ से तदस्य इस पद की अनुवृत्ति होती है। प्रत्यय:, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिता: इति ये अधिकार करते हैं। तेन तत्= प्रथमान्त यत्तदेत् प्रातिपदिकों से तत्परिमाण के अर्थ में तद्धितसंज्ञक वतुप् प्रत्यय पर होता है यह सूत्रार्थ सिद्ध होता है। वतुप् का पकार इत्संज्ञक है और उकार उच्चारण के लिए है, अत: वत् मात्र शेष रहता

है। यह ध्यान में रखने योग्य है कि वतिप्रत्ययान्त शब्द वत्प्रत्ययान्त शब्द से भिन्न है। वतिप्रत्ययान्तशब्द अव्यय होता है। किन्तु वतुप्-प्रत्ययान्त शब्द तीनों लिङ्गों में भी होता है।

**उदाहरण**- यावान्, तावान्, एतावान्।

**सूत्रार्थ समन्वय** - यत् परिमाणम् अस्य यह लौकिक विग्रह होने पर यत् सु इस प्रथमान्त यत्प्रातिपदिक से प्रकृत सूत्र से वतुप्-प्रत्यय, अनुबन्धलोप, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक होने पर यत् वत् यह होता है। तत्पश्चात् आ सर्वनाम्नः इस सूत्र से तकार के स्थान पर आकार आदेश होने पर और सवर्णदीर्घ होने पर सुप्रत्यय होकर यावत् स् यह स्थिति उत्पन्न हुई। तत्पश्चात् उगित्त्व होने से उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः इस सूत्र से नुमागम होने पर अत्वसन्तस्य चाधातोः इतस सूत्र से उपधा के दीर्घ होने पर यावान् त् स् इस स्थिति में सकार का हल्ङ्यादि लोप, तकार का संयोगान्त लोप होने पर यावान् यह रूप सिद्ध होता हैं। स्त्रीत्वविवक्षा में तो उगिदचाम् इससे ङीप्प्रत्यय होने पर यावती यह, नपुसंकलिङ्ग में तो स्वमोर्नपुंसकात् इतस सूत्र से सु का लोप होने पर यावत् यह।इस प्रकार तीन रूप होते हैं। इस प्रकार ही तत् परिमाणमस्य इस अर्थ में तावान्, तावती, तावत् यहाँ और एतत् परिमाणमस्य इस अर्थ में एतावान्, एतावती, एतावत् यहाँ समान प्रक्रिया जानने योग्य है। तत्पश्चात् इस अर्थ में ही किम् और इदम् शब्दों से प्रकारान्तर से वतुप्-प्रत्यय होता है, यह दिखाने के लिए यह सूत्र आरम्भ करते है-

## 31.9 किमिदम्भ्यां वो घः॥ (५.२.४४)

**सूत्रार्थ** - किम् और इदम् शब्दों से वतुप् प्रत्यय हो, वकार को घ आदेश हो।

**सूत्रव्याख्या** - इस विधि सूत्र में तीन पद हैं। किमिदम्भ्याम् (५/२), वः (६/१), घः (१/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप् (५.२.३९) यहाँ से परिमाणे, वतुप् इन दोनों पदों की अनुवृत्ति होती है। तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतच् (५.२.३६) यहाँ से तदस्य इस की अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः ये अधिकार सूत्र आते हैं। तथा तत्परिमाणमस्य अस्ति इस अर्थ में परिमाण होने पर विद्यमान प्रथमान्त किम् और इदम् प्रातिपदिकों से तद्धितसंज्ञक वतुप्-प्रत्यय होता है, किन्तु वकार के स्थान पर घ आदेश होता है यह सूत्रार्थ फलित होता है।

**उदाहरणम्** - कियान्। इयान्।

**सूत्रार्थसमन्वय**- किम् परिमाणम् अस्य - कियान् (क्या है परिमाण इसका अर्थात् कितना, how much)। अत्र परिमाण अर्थ में वर्तमान किम् सु इस प्रथमान्त से प्रकृत सूत्र से तत् परिमाणम् अस्य अस्ति इस अर्थ में वतुप्-प्रत्यय, अनुबन्धलोप, और वतुप् के वकार को घ आदेश होने पर किम् घत् यह होता है। तत्पश्चात् आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् इस सूत्र से घकार के स्थान पर इय्-आदेश होने से किम् इय् अत् इस स्थिति में अग्रिम सूत्र को आरम्भ करते हैं-

टिप्पणियाँ



## 31.10 इदंकिमोरीश्की॥ (६.३.८९)

**सूत्रार्थ** - दृग्, दृश और वतुप् परे रहते इदम् को ईश्, किम् को की आदेश हो।

**सूत्रव्याख्या** - इस विधिसूत्र में दो पद है। इदंकिमोः (६/२), ईश्की (लुप्तप्रथमा द्विवचनान्त) सूत्रगत पदों का विच्छेद है। दृग्दृशवतुषु (६.३.८९) यह सूत्रम अनुवर्तित होता है। ईश् च की च ईश्की, इतरेतरयोगद्वन्द्व होने पर सौत्रत्वाद्वि विभक्ति का लोप। अथवा ईश् की यह दो पद बोध्य होने पर यथासंख्यमनुदेशः समानाम् यह परिभाषा उपस्थित होती है। ईश् का शकार शित् है। अतः शित्त्व होने से अनेकाल्शित्सर्वस्य इस परिभाषा से इदम् के स्थान पर ईश् यह सर्वादेश होता है। इस प्रकार की यह अनेकाल् है। उस कारण से उस परिभाषा से ही किम् के स्थान पर की यह सर्वादेश होता है। और तब सूत्रार्थ होगा- दग्, दृश् और वतुप् परे रहते इदम् शब्द के स्थान पर ईश् आदेश होता है, और किम् शब्द के स्थान पर की आदेश होता है।

**उदाहरण** - कियान्।

**सूत्रार्थसमन्वय** - इस प्रकार किम् इयत् इस स्थिति में एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय से वतुप्-प्रत्यय पर होने से इदंकिमोरीश्की इस सूत्र के योग से किम् के स्थान पर की यह सर्वादेश होने पर की इयत् यह होता है। तत्पश्चात् यस्येति च इस सूत्र से भसंज्ञक ईकार का लोप होने पर कियत् यह निष्पादित होता है। तत्पश्चात् पुंस्त्व विवक्षा में सुप्रत्यय, उपधादीर्घ, नुमागम, हल्ङ्यादिलोप, और संयोगान्तलोप होने पर कियान् यह रूप सिद्ध होता है। स्त्रीत्व विवक्षा में तो उगितश्च इससे ङीप् होने पर कियती यह रूप, नपुंसकलिङ्ग में तो स्वमोर्नपुंसकात् इससे सु का लोप होकर कियत् यह रूप सिद्ध होता है।

इस प्रकार ही इदं परिमाणमस्य इस अर्थ में इयान् (पुं), इयती (स्त्री.), इयत् (नपुं.)। यहाँ विशेष ज्ञात करने योग्य है - प्रकृत सूत्र से इदम् शब्द के स्थान पर ईश् आदेश होने पर ई इयत् इस स्थिति में यस्येति च इस सूत्र से भसंज्ञक ईकार का लोप होने पर प्रत्यय मात्र ही शेष रहता है। अतः इयान् इत्यादि में प्रकृति का लेश भी नहीं रहता है।

अब अवयवपरक संख्यावाचक शब्द से अवयवी के बोध के लिए तयप्-प्रत्यय का विधान करने के लिए यह सूत्र आरम्भ करते है-

## 31.11 संख्याया अवयवे तयप्॥ (५.२.४२)

**सूत्रार्थ** - अवयव में वर्त्तमान संख्यावाचक प्रथमान्त प्रातिपदिक से अस्य इस अर्थ में तद्धित प्रत्यय तयप् होता है।

**सूत्र व्याख्या** - इस विधिसूत्र में तीन पद है।संख्यायाः (५/१), अवयवे (७/१), तयप् (१/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतच् (५.२.३६) यहाँ से तदस्य इस पदद्वय की अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः ये अधिकार सूत्र आते हैं, इस प्रकार अवयव अर्थ में वर्तमान प्रथमान्त संख्यावाचक प्रातिपदिक से अवयवः अस्य अस्ति

इस अर्थ में तद्धितसंज्ञक तयप् प्रत्यय परे होता है, यह सूत्रार्थ है। तयप् का पकार इत्संज्ञक है, अतः तय मात्र शेष रहता है। अनुदात्तौ सुप्पितौ इस सूत्र से अनुदात्त स्वर के लिए तयप् होने पर पित्करण है।

**उदाहरण**- पञ्चतयम्।

**सूत्रार्थ समन्वय** - पञ्च अवयवा अस्य सन्ति - पञ्चतयम् (पांच अवयव हैं इस के, अर्थात् पाञ्च अवयवों वाला अवयवी)। यहाँ अवयव अर्थ में वर्तमान पञ्चन् जस् इस संख्या वाचक प्रथमान्त प्रातिपदिक से अवयवाः सन्ति इस अर्थ में प्रकृत सूत्र से तयप् होने पर, अनुबन्धलोप, तद्धितान्त होने के कारण प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक होने पर पञ्चन् तय यह होता है। तत्पश्चात् स्वादिष्वसर्वनामस्थाने इस सूत्र से पद संज्ञा होने पर न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य इस सूत्र से नकार का लोप, नपुंसकलिङ्ग में विभक्ति कार्य होने पर पञ्चतयम् यह रूप सिद्ध होता है। स्त्रीत्वविवक्षा में तो टिड्ढाणञ् इत्यादि सूत्र से ङीप् होकर भसंज्ञक अकार का लोप होने पर पञ्चतयी यह रूप सिद्ध होता है। तयप्-प्रत्ययान्त शब्द का धर्मप्रधान निर्देश होने पर साधारणतः नपुंसकलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में प्रयोग होता है। जैसे- वृत्तीनां पञ्चतयम्, वृत्तीनां पञ्चतयी। धर्मी प्रधान निर्देश होने पर तो विशेष्य के अनुसार लिङ्ग होता है, उससे तीनों लिङ्ग होते हैं। यथा त्रयाः त्रये वा लोकाः, त्रय्यः स्थितयः, त्रयाणि जगन्ति।

एवमेव चत्वारः अवयवाः अस्य - चतुष्टयम्।

षट् अवयवाः अस्य - षट्तयम्।

सप्त अवयवाः अस्य - सप्ततयम्।

अष्टौ अवयवाः अस्य - अष्टतयम्।

नव अवयवाः अस्य - नवतयम्।

वहाँ द्वि-त्रि शब्दों से विहित तयप् के स्थान पर विकल्प से अयच्-विधान के लिए सूत्र आरम्भ करते हैं-

## 31.12 द्वित्रिभ्यां तयस्यायज्वा॥ (५.२.४३)

**सूत्रार्थ** - द्वि और त्रि शब्द से परे तयप् के स्थान में अयच् आदेश हो विकल्प से।

**सूत्रव्याख्या** - इस विधिसूत्र में चार पद हैं। द्वित्रिभ्याम् (५/२), तयस्य (६/१), अयच् (१/१) वा (अव्ययम्) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। द्विश्च त्रिश्च तयोः इतरेतरयोगद्वन्द्वे द्वित्रौ, ताभ्यां द्वित्रिभ्याम्। इस प्रकार द्वि और त्रि प्रातिपदिकों से विहित तयप् के स्थान पर विकल्प से अयज् आदेश होता है, यह सूत्र का अर्थ सिद्ध होता है। अयच् का चकार इत्संज्ञक है। अयचः चित्करणं चितः (६.१.१५७) इस के योग से अन्तोदात्त स्वर के लिए है, यह जानना चाहिए। अयच् यह अनेकाल् है। अतः अनेकाल्शित्सर्वस्य इस सूत्र से तय इस के सम्पूर्ण स्थान पर अयच् यह सर्वादेश होता है।

टिप्पणियाँ



**उदाहरण** – द्वयम्, द्वितयम्। त्रयम्, त्रितयम्।

**सूत्रार्थ समन्वय** – द्वौ अवयवौ अस्य – द्वयं द्वितयं वा (दो अवयव हैं इस के अर्थात् दो अवयवों वाला अवयवी)। यहाँ द्वि औ इस प्रथमान्त प्रातिपदिक से अवयवाः अस्य सन्ति इस अर्थ में संख्याया अवयवे तयप् इस सूत्र से तयप् प्रत्यय होने पर तयप् में अनुबन्धलोप होने पर सुपो धातुप्रातिपदिकयोः इस से सुब्लुक होने पर द्वि तय यह होता है। तत्पश्चात् द्वित्रिभ्यां तयस्यायज्वा इस प्रकृत सूत्र से तय के स्थान पर विकल्प से अयज् आदेश होने पर, अनुबन्धलोप होने पर द्वि अय इस स्थिति में भसंज्ञक अकार का लोप होने पर द्व अय यह होता है। तत्पश्चात् विभक्ति कार्य होने पर द्वयम् यह रूप होता है। अयच् के अभाव में तयप् होने पर तो द्वितयम् यह रूप होता है।

इस प्रकार ही त्रयः अवयवाः अस्य इस अर्थ में त्रयं अथवा त्रितयं यह रूप होता है।

कभी तयप् के स्थान पर नित्य अयच् आदेश होता है। यथा उभौ अवयवौ अस्य इस अर्थ में उभयम् यह रूप होता है। यहाँ तो उभादुदात्तो नित्यम् इससे तयप् के स्थान पर नित्य ही अयज् आदेश होता है।

## 31.13 अतिशायने तमबिष्ठनौ।। (५.३.५५)

**सूत्रार्थ** – अतिशय विशिष्टार्थ में वर्तमान प्रथमान्त पद से स्वार्थ में तमप् और इष्ठन्-ये दोनों होते हैं।

**सूत्रव्याख्या** – यह विधि सूत्र है। दों पदों का सूत्र है। तमप् च इष्ठन् च तमबिष्ठनौ यह प्रथमा एकवचनान्त विधीयमान प्रत्यय है। अतिशायने यह सप्तमी एकवचनान्त है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः ये अधिकार करते हैं। अतिशायन शब्द का प्रकर्ष अर्थ है, तमप् का पकार और इष्ठन् का नकार इत्संज्ञक होते हैं। अतः तम, इष्ठ ये ही शेष रहते हैं। तमप् का पकार अनुबन्ध अनुदात्तौ सुप्पितौ इससे अनुदात्त स्वर के लिए है। इष्ठन् का नकारानुबन्ध ञ्नित्यादिर्नित्यम् इससे उदात्त स्वर के लिए है। इस प्रकार प्रकर्ष विशिष्टार्थ में वर्तमान प्रातिपदिक से तद्धितसंज्ञक तमप् और इष्ठन् प्रत्यय परे में होते हैं, यह सूत्र का अर्थ है। तमप्-प्रत्यय प्रत्येक प्रातिपदिक से होता है, किन्तु इष्ठन् प्रत्यय गुणवाचक से ही होता है यह पार्थक्य सम्यक् रूप से जानना चाहिए।

**उदाहरण** – अयम् एषाम् अतिशयने लघुः यह लौकिक विग्रह होने पर अतिशय विशिष्टार्थ में वर्तमान लघु सु इस प्रथमान्त प्रातिपदिक से अतिशायने तमबिष्ठनौ इस सूत्र के योग से तमप्-प्रत्यय होने पर, अनुबन्धलोप, प्रातिपदिकसंज्ञादि कार्य होने पर लघुतमः यह रूप सिद्ध होता है। इष्ठन्प्रत्यय होने पर तो लघु इष्ठ इस स्थिति में टेः इस सूत्र से टिसंज्ञक उकार का लोप होने पर लघ् इष्ठ इस स्थिति में वर्णसम्मेलन और प्रातिपदिकादि कार्य होने पर लघिष्ठः यह रूप सिद्ध होता है। तमप्-प्रत्यय होने पर तो लघुतमः यह रूप होता है।

अयम् एषाम् अतिशयेन आढ्यः यहाँ तो आढ्यशब्द लघुशब्द के समान गुणवाचक नहीं है। अतः इष्ठन्प्रत्यय नहीं, अपितु तमप्-प्रत्यय ही होता है। इस कारण आढ्यतमः यह रूप होता है इति जानीत। बहुत में एक के अतिशय बोधन के लिए यह सूत्र आरंभ किया गया है। दो में से एक के अतिशय बोधन के लिए तो अग्रिम सूत्र आरंभ किया जाता है-

## 31.14 द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ॥ ( ५.३.५७ )

**सूत्रार्थ** – दो में एक के अतिशय अर्थ में विभक्तव्य ओर उपपद सुप्तिङन्त से तरप् और ईयसुन् प्रत्यय होते हैं।

**सूत्रव्याख्या** – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। उच्यते इति वचनं, द्वयोर्वचनं द्विवचनम्। विभक्तुं योग्यं विभज्यं, द्विवचनं च विभज्यं च उनका समाहारद्वन्द्व द्विवचनविभज्यम्। द्विवचनविभज्यं च तद् उपपदम्– द्विवचनविभज्योपपदमिति कर्मधारयः, तस्मिन् इति द्विवचनविभज्योपपदे यह सप्तमी एकवचनान्त है। तरप् च ईयसुन् च इति तयोरितरेयोगद्वन्द्वो तरबियसुनौ यह प्रथमा द्विवचनान्त विधीयमान प्रत्यय है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः ये सूत्र अधिकार करते हैं। यहाँ द्विवचनम् यह पारिभाषिक शब्द नहीं है, अपितु दो पदार्थों का प्रतिपादक है, यह अर्थ है। इस प्रकार द्विवचन अथवा विभक्तव्य उपपद में होने पर उत्कर्ष विशिष्टार्थ में वर्तमान सुबन्त और तिङन्तों से तरप् और ईयसुनौ प्रत्यय होते हैं यह सूत्र का अर्थ है। तरप् का पकारानुबन्ध अनुदात्तौ सुप्पितौ इससे अनुदात्त स्वर के लिए है। यहां सुबन्त और तिङन्त यह प्रकृति द्वय है। द्विवचन और विभज्य यह उपपद द्वय है। तथा तरप् और ईयसुन् प्रत्ययद्वय है। यहाँ पारिभाषिक उपपद नहीं है, अपितु समीप में उच्चारित पद उपपद है, यह ही अन्वर्थ स्वीकार किया जाता है। यह सूत्र अतिशायने तमबिष्ठनौ तिङश्च इस सूत्र का अपवादभूत है। अजादी गुणवचनादेव इस नियम के अनुसार ईयसुन्प्रत्यय गुणवाचक प्रातिपदिक से ही होता है, तिङन्त से नहीं। यह नियम है, इसका ध्यान रखना चाहिए।

**उदाहरण** – द्विवचन उपपद सुबन्त का उदाहरण – अयम् अनयोः लघुः-लघुतरः, लघीयान्।

अयम् अनयोः अतिशयेन लघुः यह लौकिक विग्रह है। यहाँ अनयोः यह पदार्थ द्वय का प्रतिपादक पद है, समीप में उच्चारित किया गया है। तत्पश्चात् अतिशय विशिष्टार्थ में वर्तमान लघु सु इस सुबन्त से स्वार्थ में द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ इस सूत्र से तरप्प्रत्यय होने पर, अनुबन्धलोप, प्रातिपदिकंज्ञादि कार्य होने पर लघुतरः यह रूप सिध्यति सिद्ध होता है। जब तो ईयसुन्प्रत्यय होता है तब अनुबन्धलोप होने पर टेः इस सूत्र से टिसंज्ञक उकार का लोप होने पर लघीयस् इस स्थिति में सुप्रत्यय होने पर उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः इस सूत्र से नुमागम होने पर लघीयन्स् स् इस स्थिति में सान्महतः संयोगस्य इस सूत्र से दीर्घ होने पर लघीयान्स् स् इस स्थिति में सु के सकार का हल्ङ्यादिलोप होने पर प्रकृति के सकार का संयोगान्तस्य इस से लोप होने पर लघीयान् यह रूप सिद्ध होता है। इस रीति से पटुतराः इत्यादि रूप भी सिद्ध होता है।

द्विवचन उपपद होने पर तिङन्त का उदाहरण – इयम् अनयोः अतिशयेन पचति इति पचतितराम्।

विभक्तव्य उपपद होने पर सुबन्त का उदाहरण– माथुराः पाटलिपुत्रकेभ्यः आढ्यतराः। यहाँ पाटलिपुत्रकेभ्यः यह विभज्य उपपद है।

## 31.15 प्रकृत्यैकाच्॥ ( ६.४.१६३ )

**सूत्रार्थ** – इष्ठादि प्रत्यय परे रहते एकाच् शब्द को प्रकृति भाव हो।

टिप्पणियाँ



**सूत्रव्याख्या** - यह विधि सूत्रम् है। इस सूत्र में पद द्वय है। प्रकृत्या यह तृतीया एकवचनान्त है। एकः अच् यस्य तद् एकाच्, बहुव्रीहिसमास है। एकाच् यह प्रथमा एकवचनान्त है। तुरिष्ठेमेयः सु इत्यतः इष्ठेमेयस्सु इसकी अनुवृत्ति होती है। भस्य, अङ्गस्य ये दोनों अधिकार करते हैं। और विभक्ति विपरिणाम से अङ्गं भम् यह अर्थ होता है। इस प्रकार एकाच् भसंज्ञक अङ्ग को प्रकृति भाव हो, इष्ठन्, इमनिच् तथा ईयसुन् प्रत्यय परे रहते। अपने रूप में स्थित रहने को ही प्रकृतिभाव कहा जाता है। टेः इति सूत्र से टिलोप प्राप्त होने पर उसके अभाव का बोध कराने के लिए इसकी प्रवृत्ति होती है।

**उदाहरणम्**- श्रेष्ठः, श्रेयान्। अयमेषाम् अतिशयेन प्रशस्य यह लौकिक विग्रह होने पर प्रशस्य सु इस अलौकिक विग्रह में अतिशायने तमबिष्ठनौ इस के योग से इष्ठन्प्रत्यय होने पर प्रातिपदिक संज्ञा, सुब्लुक होने पर प्रशस्य इष्ठ इस स्थिति में प्रशस्य श्रः इसके योग से प्रशस्य शब्द के स्थान पर श्र यह आदेश होने पर श्र इष्ठ जायते। तत्पश्चात् प्रकृति का एकाच् वाली होने से टेः इसके योग से टि लोप प्राप्त होने पर उसको बांधकर प्रकृत्यैकाच् इस सूत्र से प्रकृतिभाव होने पर आद्गुणः इससे गुणैकादेश होने पर श्रेष्ठ यह होता है। तत्पश्चात् स्वादिकार्य होने पर श्रेष्ठः यह रूप होता है। पुनः द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ इस सूत्र से ईयसुन्प्रत्यय होने पर प्रशस्य श्रः इससे श्र आदेश होने पर प्रकृतिवद्भाव होकर गुणैकादेश और स्वादिकार्य होने पर श्रेयान् यह रूप भी होता है।

अयम् एषाम् अतिशयेन प्रशस्यः इस अर्थ में प्रशस्य सु यह अलौकिक विग्रह होने पर अतिशायने तमबिष्ठनौ इस सूत्र से इष्ठन्प्रत्यय, अनुबन्धलोप, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक होने पर प्रशस्य इष्ठ इस स्थिति में यह सूत्र आरम्भ करते है-

## 31.16 ज्य च॥ (५.३.६१)

**सूत्रार्थः**- प्रशस्य को ज्य आदेश हो इष्ठन् और ईयसुन् परे रहते।

**सूत्रव्याख्या** - इस विधि सूत्र में दो पद ज्य यह लुप्त प्रथम पद है। च यह अव्यय पद है। प्रशस्यस्य श्रः यहाँ से प्रशस्यस्य इसकी और अजादी गुणवचनादेव यहाँ से विभक्तिविपरिणाम होने पर अजादौ इसकी अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः इसका अधिकार है। और उसका विभक्तिवचन विपरिणाम होने से प्रत्ययय़ोः यह अर्थ है। इस प्रकार अजादि प्रत्ययों से परे अर्थात् इष्ठन् और ईयसुन् प्रत्यय परे रहते प्रशस्य के स्थान पर ज्य यह आदेश होता है, यह सूत्रार्थ है।

**उदाहरण** - ज्येष्ठः।

**सूत्रार्थसमन्वय** - इस प्रकार अयम् एषाम् अतिशयेन प्रशस्य इस अर्थ में प्रशस्य इष्ठ यह होने पर अजादि इष्ठन्प्रत्यय पर है इस कारण से प्रकृत सूत्र से ज्य आदेश, भसंज्ञक अकार का लोप प्राप्त होने पर प्रकृत्यैकाच् इस सूत्र से प्रकृतिवद्भाव होने और स्वादिकार्य होने पर ज्येष्ठः यह रूप होता है।

अयम् एषाम् अतिशयने प्रशस्यः इस अर्थ में तो द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ इसके पक्ष में ईयसुन् होने पर, अनुबन्धलोप, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक होने पर प्रशस्य ईयस् यह होता है। तत्पश्चात् ज्य च इस सूत्र से ज्यादेश होने पर ज्य ईयस् इस स्थिति में भसंज्ञक आकार का लोप प्राप्त होने पर उसको बांधकर प्रकृत्यैकाच् इस सूत्र से प्रकृतिभाव होने पर लोप नहीं होता है। तत्पश्चात् ज्यादादीयसः इस सूत्र से ईकार के स्थान पर आकारादेश होने से ज्या आयस् इस स्थिति में अकः सवर्णे दीर्घः इस सूत्र से दीर्घ होकर ज्यायस् यह होता है। तत्पश्चात् स्वादिकार्य होने पर ज्येयान् यह रूप होता है।

## 31.17 कु तिहोः॥ (७.२.१०४)

**सूत्रार्थ** – तकारादि प्रत्यय, हकारादि प्रत्यय परे रहते किम्-शब्दस् के स्थान पर कु यह सर्वादेश होता है।

**सूत्रव्याख्या** – तिश्च ह् च दोनों का इतरयोगद्वन्द्व होने पर तिहौ तयोः इति तिहोः यह सप्तमी द्विवचनान्त है।यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में पदद्वय है। अष्टन आ विभक्तौ यहाँ से विभक्तौ, किमः कः यहाँ से किमः इसकी अनुवृत्ति होती है। यस्मिन्विधिस्तदादावल्ग्रहणे इस परिभाषा से तदादि विधि से तकारादि-थकारादि यह ही अर्थ होता है।यह सूत्र किमः कः इस सूत्र का अपवाद है, इस प्रकार सूत्रार्थ सिद्ध होता है।

**उदाहरण** – कुतः, कस्मात्। कस्मात् यह लौकिक विग्रह होने पर किम् ङसि इस अलौकिक विग्रह में पञ्चम्यास्तसिल् इस सूत्र से तसिल्प्रत्यय, अनुबन्धलोप, प्रातिपदिक संज्ञा, सुब्लुक होने पर किम् तस् इस स्थिति में प्राग्दिशो विभक्तिः इस सूत्र से विभक्ति संज्ञा होने पर किमः कः इस सूत्र से क आदेश प्राप्त होने पर उसको बांधकर कु तिहोः इस सूत्र से कु यह सर्वादेश होने पर कुतस् यह होता है। तत्पश्चात् सुविभक्ति होने पर और अव्ययत्व होने से अव्ययादाप्सुप इससे सु का लोप होने पर शेष के सकार का रुत्व विसर्ग करने पर कुतः यह रूप सिद्ध होता है। 'तसिल्' विकल्प से होता है अतः पक्ष में कस्मात् यह भी सही है। इस प्रकार ही यतः,यस्मात्। ततः, तस्मात्। इतः, अस्मात्। अतः, अस्मात्। अमुतः, अमुष्मात्। बहुतः, बहुभ्यः इत्यादि रूप सिद्ध होते हैं।

## 31.18 कृभ्वस्तियोगे संपद्यकर्तरि च्विः॥ (५.४.५०)

**सूत्रार्थ** – विकारात्मतां प्राप्नुवत्यां प्रकृतौ वर्तमानाद् विकारशब्दात् स्वार्थे च्विर्वा स्यात् करोत्यादिभिर्योगे।

**सूत्रव्याख्या** – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में सूत्रे तीन पद हैं। कृश्च भूश्च अस्तिश्च तेषामितरेतर योगद्वन्द्वः कृभ्वस्तयः। तेषां कृभ्वस्तीनाम्, तेषां योगः कृभ्वस्तियोगः तस्मिन्, कृभ्वस्तियोगे यह सप्तमी एकवचनान्त है। सम्पदनं सम्पद्यः तस्य कर्ता, सम्पद्यकर्ता, तस्मिन् सम्पद्यकर्तरि यह भी सप्तमी एकवचनान्त है, च्विः यह प्रथमा एकवचनान्त विधीयमान प्रत्यय है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः ये अधिकार करते हैं। अभूततद्भावे वक्तव्यम् यह वार्तिक यहाँ आश्रय है। अभूतस्य=कार्यरूप से अपरिणत का तद्भाव – उस कार्यरूप से भाव अभूत तद्भाव यह कहा

जाता है। इस प्रकार अभूततद्भाव गम्य होने पर जो कर्ता रूप प्रातिपदिक बनता है, उस प्रातिपदिक से स्वार्थ में विकल्प से च्विप्रत्यय होता है, यदि कृ, अस्, भू इनमें से किसी एक के साथ उस प्रातिपदिक का योग होता है। च्वि यहाँ चकार चुटू इस सूत्र से इत्संज्ञक है, और वकार वेरपृक्तस्य इस सूत्र से इत्संज्ञक है, इकार उपदेशेऽजनुनासिक इत् इससे इत्संज्ञक है। अतः च्वि यहाँ कुछ भी शेष नहीं रहता है। अतः यह सर्वापहारलोप कहलाता है। च्विप्रत्ययान्त की ऊर्यादिच्विडाचश्च इस सूत्र से निपातसंज्ञा होने पर स्वरादिनिपातमव्ययम् इससे अव्ययसंज्ञक होता है यह मन में सम्यक रूप से धारण करना चाहिए।

**उदाहरणम्**– अकृष्णः कृष्णः सम्पद्यते, तं करोति इति कृष्णीकरोति। यहाँ अभूततद्भाव स्पष्ट ही है। सम्पद्यते इसके कर्तृद्वय है – अकृष्णः और कृष्णः। अत्र विकारवाचक कृष्ण शब्द को वक्ता प्रमुखता से कर्तृत्व रूप में कहना चाहता है। किन्तु उसका कृ धातु के साथ भी योग है, क्योंकि यह कृ धातु कर्म भी है। यहाँ अकृष्णः शब्द प्रकृति और कृष्णः शब्द विकार है। कार्यकारण में अभेद विवक्षा होने पर कृष्णशब्दः प्रकृति अकृष्ण में भी विद्यमान है। इस प्रकार विकारवाचक कृष्ण अम् इस प्रातिपदिक से अभूततद्भावे वक्तव्यम् इस वार्तिक के सहयोग से कृभ्वस्तियोगे सम्पद्यकर्तरि च्विः इस सूत्र से च्वि प्रत्यय, उसका सर्वापहारलोप होने पर प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक होने पर कृष्ण करोति इस स्थिति में अग्रिम यह सूत्र आरम्भ करते हैं –

## 31.19 अस्य च्वौ॥ (७.४.३२)

**सूत्रार्थ** – अवर्ण को ईकारत् च्वि प्रत्यय परे रहते।

**सूत्रव्याख्या** – यह विधि सूत्रम् है। यह दो पदों का सूत्र है। अस्य यह षष्ठी एकवचनान्त है। च्वौ यह सप्तमी एकवचनान्त है। ई घ्राध्मोः यहाँ से ई यह अनुवर्तित होता है। अङ्गस्य इसका अधिकार आता है।और उसका विशेषण अस्य यह है। अतः विशेषणत्व होने से तदन्त विधि में अवर्णान्त अङ्ग का यह अर्थ होता है।इस प्रकार च्विप्रत्यय परे रहते अवर्णान्त के स्थान पर ईकारादेश होता है, यह सूत्रार्थ है। अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा की उपस्थिति है। उससे अन्त्य अल् के स्थान पर अर्थात् अवर्ण के स्थान पर ही ईकारादेश होता है। च्वि प्रत्यय का लोप होने पर भी प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् इस परिभाषा से ईकारादेश सिद्ध होता है।

**उदाहरण** – इस प्रकार कृष्ण करोति इस स्थिति में अस्य च्वौ इस सूत्र से णकारोत्तरवर्ती अकार के स्थान पर ईकारादेश होने पर कृष्णी यह रूप सिद्ध होता है। भवति योग होने पर तो कृष्णीभवति यह रूप सिद्ध होता है। इस प्रकार अब्रह्म ब्रह्म भवति इस अर्थ में ब्रह्मीभवति यह रूप होता है।

अशुचिः शुचिर्भवति इस अर्थ में तो कृभ्वस्तियोगे सम्पद्यकर्तरि च्विः इस के योग से च्विप्रत्यय होने पर उसका लोप होने पर प्रातिपदिकसंज्ञा और सुब्लुक होने पर शुचि भवति इस स्थिति में अग्रिम सूत्र आरम्भ करते हैं –

## 31.20 च्वौ च॥ ( ७.४.२६ )

**सूत्रार्थ** – च्वि परे रहते परे पूर्व का दीर्घ होता है।

**सूत्रव्याख्या** – यह विधिसूत्र है। यह द्विपद सूत्र है। च्वौ यह सप्तमी एकवचनान्त है, च यह अव्ययपद है। अङ्गस्य यह अधिकार करता है। अचः यह अङ्ग इस विशेष्य का विशेषण है। अतः येन विधिना तदन्तस्य इस सूत्र से तदन्तविधि में अजन्त अङ्ग का यह अर्थ होता है। अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः यहाँ से दीर्घः इसकी अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार सूत्रार्थ है – च्विप्रत्यय परे रहते अजन्त अङ्ग के स्थान पर दीर्घादेश होता है। अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से अन्त्य अल् के=अच् के ही स्थान पर दीर्घादेश होता है।

**उदाहरण** – इस प्रकार शुचि भवति इस स्थिति में च्वौ च इस सूत्र से इकार का दीर्घ ईकार होने पर शुचीभवति यह रूप सिद्ध होता है।

## पाठगत प्रश्न 31.2

1. अशुचिः शुचिर्भवति इस लौकिक विग्रह में च्विप्रत्यय होने पर क्या रूप होता है?
2. कृष्णीकरोति यहां अकार का ईत्त्व किस सूत्र से होता है?
3. शुचीभवति यहाँ दीर्घ किस से होता है?
4. च्विप्रत्यय विधायक सूत्र कौन सा है?
5. कस्मात् इस अर्थ में तद्धितान्त शब्द कौन सा है?
6. किम् शब्द के स्थान पर कु यह आदेश किससे होता है?
7. अयमेषाम् अतिशयेन प्रशस्य इस लौकिक विग्रह में तद्धितान्त शब्द कौन सा है?
8. प्रकृत्यैकाच् यह सूत्र क्या विधिसूत्र है अथवा अतिदेशसूत्र है?
9. तरप्प्रत्यय विधायक सूत्र लिखिए।
10. तमप्-प्रत्यय विधायकसूत्र लिखिए।

## पाठ का सार

तद्धित प्रत्यय सम्बन्धी इस अन्तिम पाठ में प्रायः हमारे द्वारा व्यवहृत शब्दों की आलोचना विद्यमान हैं जिससे हमारे लोकव्यवहार के समय में शब्द प्रयोग करने के लिए समर्थ होंगे। अण्, अञ्, त्व, तल्, इमनिच्, ष्यञ्, चुञ्चुप्, चणप्, तरप्, तमप्, ईयसुन्, और च्वि इन मुख्यों प्रत्ययों के विषय में यहाँ आलोचना विहित है। पृथोर्भावः इस अर्थ में कितने रूप होते हैं इस विषय में स्पष्ट व्याख्यान

किया गया है। और विशेष रूप उस उस स्थान पर सूत्र सहित प्रदर्शित किए गए हैं। कृभ्वस्तियोगे संपद्यकर्तरि च्वि: इस च्विप्रत्यय विधायक सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या की गई है। और वहाँ अकृष्ण: कृष्ण: सम्पद्यते इस अर्थ में कृष्णीभवति रूप सिद्ध होता है, उस विषय में यहां भली-भाँति व्याख्या की गई है, जिससे अन्य रूप भी सिद्ध करने में समर्थ हो सकते हैं। इस प्रकार यह तद्धित प्रकरण का अंतिम पाठ समाप्त होता है।

## पाठांत प्रश्न

1. सार्वभौम शब्द की रूप सिद्धि कीजिए।
2. तस्य भावस्त्वतलौ इस सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
3. पृथोर्भाव: इस अर्थ में कितने रूप होते हैं और उनकी रूपसिद्धि कीजिए।
4. तरप् और तमप्-प्रत्यय के विषय में टिप्पणी लिखिए।
5. कृभ्वस्तियोगे संपद्यकर्तरि च्वि: इति सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
6. गुणवचनब्राह्मणादिभ्य: कर्मणि च इस सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
7. सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणञौ इस सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
8. तस्येश्वर: इस सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### 31.1

1. अण्
2. वतुप्
3. गोता, गोत्वम् यह रूपद्वय
4. चुञ्चुप्
5. तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ
6. ष्यञ्
7. ष्यञ्प्रत्यय:

8. इमनिच्

9. प्रथिमा

10. तलन्तं स्त्रियाम्

## 31.2

1. शुचीभवति

2. अस्य च्वौ

3. च्वौ च

4. कृभ्वस्तियोगे संपद्यकर्तरि च्विः

5. कुतः

6. कु तिहोः

7. श्रेष्ठः, श्रेयान्

8. विधिसूत्रम्

9. द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ

10. अतिशायने तमबिष्ठनौ

**॥ इक्कतीसवां पाठ समाप्त॥**